



कुल गुण: ४०

३ क्लास

- [विभाग - A]
- 1 → विकल्पभांषी उत्तर (हरकनो 1 गुण) [04]
- 1 इस्लाम:
 - 2 अयुग्मनतः
 - 3 आरुत
 - 4 दामिनी
 - 5 शारदाभुगः
 - 6 साहसक्यः
 - 7 भुगः
 - 8 अग्निम्
- विवृत स्थानानि पूरयत (हरकनो 1 गुण) [05]
- 9 अचलव्यम
 - 10 नित्यः
 - 11 कृतशब्दः
 - 12 स्वपक्षं परपक्षं च
- 13 दर्शनीयम्
- 'के' वर्णान् अर 'ख' वर्णं योजयत (हरकनो 1 गुण) [03]
- 14 लदा श्रुतम्
 - 15 दूरीकं, धर्मकं सप्तम्
 - 16 किन्तोः कुरितेला

[विभाग - B]

→ गद्यजं डनी अनुवाद (हरकनो 4 गुण) [04]
(भाषा शुद्धि, अनुवादनं द्वावभां वाणी गुण)

17. आ विषम परिविचलितम् ऋषिभ्यो प्रभना रक्षुण माह
प्रहृत्. वननं दंडितं करी नारी नाड्यो - प्रभुनी अन्गाह
प्रभु दशाशु ने दमिनिह - वनना शान्तनवा पीडयेत्।
प्रभुनी अन्विषेड पात्रेला प्रभुनी पत्नी उपस्थित.

18. हरिड मानवना चणमं ह प्रसंगो - आ ह प्रसंगो
आले त्याह मानव नवी प्रथम लेवुं व्यञ्जित्य -
रेनुं व्यञ्जित्य महान - ले व महत्त्वा

अध्यास

18 कविदास तरत व होरकुं जनायवा सुयजनशील -
 होरकुं - धाजाभां भूकुं - धाजाभां भूकुंसां होरडा पर २२
 व्यजिन - धाजाभां वरकुं होरकुं कम कम व्याज पकडनु
 तेम तेम राजना ववइयमा (गद्य-16)

→ पद्यखंडनो मातृलाघामां व्यनुवाह (हरिकता 4 गुण) ८०

19 व्या नाट्य कर्मण, कीर्तने, व्यायुहयने, शितकारड,
 बुद्धिने वधारनाकुं ने सोडने उपेक्षा व्यापनाकुं -
 व्ययुं कोरुं ज्ञान नधी, कोरुं शिलय नधी, व्यकी २२
 कोरुं विद्या कुं कुणा नधी, व्ययुं कोरुं योग
 कुं कर्म नधी न व्या नाट्यमां जहाकुं नधी
 (पद्य. 7)

अध्यास

19 अमय व्याच्यो ल्यारे व्याड अदिना धरतीके, नै
 पालीइपी द्येय पीधु-तेने व्यरुना किराी वड
 होडवाकी वाइकात (पद्य-3)
 - तेम वृक्ष तेम पुत्र - इत्याहा डारी - वृक्ष विना
 धर- तेम पुत्र विना कुण होर -

२० हेरुं कयां पहा व्यधवा कयां पहा - हेरुं
 लुमंडजना व्यापुषाणां - जरीजरा नुकमान ती न
 असोवानी - केमनी हेरुं व्याधे विर्यागा.

२१. → गद्यखंडवांकी संस्कृत भूषणां संस्कृतमां उत्तर [04
 (हरिकता 1 गुण) २३

A वृद्धे व्याघ्रः

B अनीलः कुशाहस्तः सरस्तीरे

C भो भो पाण्या! इदं सुवर्णकडकपां गृह्यताम्

D यत् भाष्येन एतत्सम्भवति

कमी हा

वाकुला

जधा
हीरवत

लाव
वाभने

इनुमा

लमिभन
कुहापि

ला
व्या २

जनायवा

२३. महव

कुमार

हिमालय

वसंत

भाजा

वंगम

नीकरी

विधित
उनी

विभाग-८

→ कबीर साहब रचना (हरकना ३ गुण) [०६]

अथानशील-
पर २२
का पकड़
१६)
गुण) १०

शकुनालाने कोणजवामं दुखाने खेसी दिवाः
महाकवि कालिदास रचित 'सुभिक्षानशाकुनालेभ'।
जहा प्रती कोर्छ सुकारनी, अंधार - राम सुखानामं,
हृष्टवन विरहनी, लाव - विन्धुनिने लीहे राम कोर्छ
लाव भूगट पती गयी - रामन मननी दिवा -
रामने मनने वाली -

कार्ड
भाषनाकुं -
वाकी
योग
नयी

अथवा
इनुमानना पात्रनी विरक्षताः
विश्वनाथ कविप्रणीत 'सौगर्भिक इरणम' व्याख्यान -
लीमसेन इनुमानने विरक्षतापूर्वक - वानरनी का प्रकार -
इहाप भेवाभां गयी - लंकड गलराट विज्ञानी निष्पत्त -
लना दीर्घं सुं डारन - लीमसेन इनुमान माहे इहे -
का प्रानकी धृष्टता माहुं ईधुं - लीमसेननी पलीमुकप
वनवावी खाभां गलराट.

वै
वड
विना
इंसी
नी

२३. महन दहन प्रसंगः कविकुलगुरु कालिदास रचित
'कुमारसंभवम्' महाकाव्य मां महन दहन प्रसंग -
हिमालय पर शंकर तपभजन - पार्वती परिवारमां
चरता - कामदेव सौंपायेलुं कार्य करवा भजन -
वसंतसकल उपस्थित - भूलावयी पार्वती विपने कुमजकाकर्म
भाजा - कामदेव संभोदन जान - विपणं विरालिण यधुं -
संयम उपपवा - शंकर कामदेवने भया - तीव्र गेवभांधी
निकपेला व्यभिचर कामदेवने जाणी वाक्या.

[०४]

२३ पृथ्वीवारक शब्दो - अथवा
शुः शुभिः अथवा अथवा रसा, विश्वठभरा,
विधुता, धरा, धरती, शोभिः, शक्तिः, वसुंधा,
उर्वी, वसुंधरा, पृथिवी, पृथ्वी, अथवा

- २४ → गद्य कमीक्षा (हरिकोण, गुणा) [0 → व्यर्थ
 A. फाल्गुन भावस्य पुणिभियाम् ।
 B. शिरष्यकशिपोः ।
 C. शिरष्यकशिपोः अस्तु राजस्य । * लासो
 D. परमेश्वरं दद्यात् न भवितव्यं व्यवहारम् । भारी
 E. दृश्य राजः शिरष्यकशिपोः न शक्यते कर्म । → वाम
 पठेया

२५ मन्त्रापूर्तिः [00
 गीतं गीतानामसूक्तं दृश्यं श्रुतिमुपमन्त्रं शुद्धि
 गीतं अक्षयवसुङ्गे विसं प्रत्य
 दयं दीनजनाय च कित्ति व्यंहर

→ गुजराती पुष्पाना गुजरातीमां उत्तर [1 → संक्षि
 [विभाग. D]

२६ वल वृक्षने वीरजाय ह. न वृक्षनी चारं लक्ष्मी 33. पंचत
 वसरडे - टिप्पि नधी हतां भाषां भाषी भाई इतिव
 इनाम
 पांर

२७ अजाकारा मेधा श्वाहित - व्यक्तता लभेवर्तुणवापुं
 न वाहकावा ~~...~~ गडगडारवापुं 1.

२४ संस्कृतमां वार वेद - वाचनी अंगपुत्र
 पाठ्य, अभिनय, गीत न रस- व्याव वेदाभांपी २.
 भाई 3
 4
 5

२९. विवाहना भांगलिक भरीत्यवमां व्यक्त चर्या
 विद्यापिरोना महेपावनी महेक्षिने भवाना कुवडली
 डारणे. 33. अथ
 धूलक
 मंगल
 न
 विषय
 वाच
 कृत

३०. दुर्गदि इरवाभां - दाह डं वरमीने जामाववा
 भाई लयलोनी जाजलमां

३१. वदने मजवा गया त्वारे वैदेवो लोठनमां
 त्वारे पदार्थो न लेवा - लजकुने 'डिना' वाह
 गाफामां वीटी गया. न न वाजगी महे ते त्वारे न ह
 भाई

[0] → अर्थविस्तार [03]
 (लाभान्तर : 1 गुण, अमर्शति : 2 गुण)

* लाभान्तरः शुद्धि ले प्रकारनी - जाइय ने अंहरनी,
 भारी ने कण वडे जाइय ने लावनाकी शुद्धि अमर्शति
 → अमर्शतिः प्रकृत श्लोकार्थ 'दशाकं धर्मकहेणम'
 पद्यपाठमां 'शोधम' शिषिक भा श्लोकमांरी
 मनुष्य जाइय शुद्धि ले शर - अंहरनी
 शुद्धि अंहरने विचारने, लावना शुद्धि - अन्त्य,
 प्रत्ये कोठे पला प्रकारना दुर्भावनी त्याग अंहरने
 अंहरनी शुद्धि.

[1] → सांक्षिप्त परिचय [विवरण. 5] (हरिकना 3 गुण) [06]

33. पर्यंततः ख्यायिता पे. विद्यगुणार्थ - उपह्वगतम 3
 कृतिव्यामां प्राज्ञीकथा नार्थपात्र - प्राज्ञीकथाव्यामां
 वृनामां वृना वृण्य - अयना काण हस त्रीण सही -
 पांश विभागा.
 1. गिरालोडः
 2. गिरा प्राप्ति
 3. काकी लुडीयम
 4. लब्ध प्राप्ता
 5. अपरीक्षित फारड

परशुकाणां अक्षरार्थ लक्ष्य समाजमां प्रवर्तनी
 धार्मिक माठयता, रीती रिवाजे, कुइदिको पर कलाए

33. अधर्ववेदः अधर्व - अर्धे धातु. विचरता 3 रिता नी
 वृत्तिकाणां निरोधरूप योगनी उपह्वरा - अधर्वकविच्छु
 मंत्रांजुं हरिन कुं माहे अधर्ववेद नाम -
 न 36 - सूत्रा - 6000 मंत्रा
 विषयः योगीनी निवृत्तिना उपाये कृषि - परशुकाणां
 अत्रशास्त्रण - लुब्धविद्या - मातृश्रमि गौरव - 'सात्रान्त'
 वृत्तानती वेद

र मू ।
 शोधनी क्रम ।
 [00]
 श्रीपतिमुपत्रक
 य च किते
 गुण)
 यार लरुधी
 माहे
 मेवलुपवापुं
 गुण
 अंगभूत
 यार पदीमांरी
 यथेला
 कुइदिको
 आभावा
 लोठनमां
 शर
 ले लार व हे

34 अग्निजलशाकुनात्मक - इतिहास वरिष्ठ ताल नारकोमा
 ३६६ नारक - शाकुनाला ने इत्यमुनि पासकपुत्री
 वरीके उर - त्रुपिनी अणुप्रविशसिमां क्वाजहार
 शाकुनालाने कोपी - दुष्यना व्यासममां शेषाया -
 जने चर्ये प्रलय - गान्धीर्विवाह - दुष्मिनी वाम -
 दुष्यनाने शाकुनालानु विवमगना - वीरी अणता

34 अथवा
 वृत्तवाचशम - महाकवि लक्ष्म वरिष्ठ - कोकी
 पर व्यादावित - हल पांडवाना इत लरीके
 शैशवी पास - पाताने पुष्पनाम - नारायण -
 गुर्वय पावेसी दुयोदिनु तिला गवर्ष हलानं अणवान
 सुवा वजाव्यु - पाने - अर्द्ध उला शपे - हलानं
 विवाह इय सुधर्षि अर्द्ध धारण - व्यापनी त्याग

35 विंशतपत्नीकनव्यायः - जंगलना गम वनाता सिंह [०२
 आस त्यारे पाहु वाजाने अवे -
 लोवः गानसे आसवाणं लले व्यापण - पहा दुवाके
 पाहा वणीने अयु - ~~...~~ विद्यार्थीनुं उ.दा

36 'देहकीदीपकन्यायः' [०२

37 'सुपक' अलंकार [००

38 'तोरकम' कण्ड [००

39 आचार्य शौरिभ्य, आलाकय अथवा विद्यागुप्त [०